*23. *[The questioner* (Shri Pramod *Mahajan) was absent. For answer,,* vide col. 34—38].

भारतीय खाद्य निगम को हुआ वित्तीय घाटा

†24. **श्री राम नरेश यादव :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारतीय खाद्य निगम को प्रति वर्ष वित्तीय घाटा हो रहा है ;

(ख) यदि हां, तो पिछले तीन वर्षों के दौरान, वर्ष-वार, इस निगम को कितना घाटा हुआ है ;

(ग) भंडारण, खाद्यानों की सम्भलाई आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कितनी धनराशि का नुकसान हुआ है ; और

(घ) निगम के कार्यकरण में सुधार करने के लिए सरकार भविष्य में क्या कार्यवाही करने का विचार रखती है ?

खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री (श्री नाथू राम मिर्धा) : (क) से (घ) एक विवरण सभा के पटल पर रखा जाता है।

विवरण

(क) से (ग) भारतीय खाद्य निगम खाद्यान्नों की वसूली और उनका वितरण सरकार द्वारा निर्धारित पूर्व निश्चित मूल्यों पर करता है। निर्गम मूल्यों में भारतीय खाद्य निगम द्वारा खाद्यान्नों को हैंडल करने की लागत पूरी तरह कवर नहीं होती है। एक सुविचारित सामाजिक नीति के रूप में सरकार द्वारा भारतीय खाद्य निगम को खाद्यान्नों की इकनामिक लागत और सरकार द्वारा निर्धारित किए गए निर्गम मूल्यों के बीच के अन्तर की राशि की राज-सहायता के रूप में प्रतिपूर्ति की जाती है।

तथापि, निगम को उसके विभिन्न परिचालनों में मुख्यतया मार्गस्थ और भण्डारण हानियों के रूप में कुछेक हानियां होती हैं। इस सम्बन्ध में 1986-87 से 1988-89 के वर्षों के बारे में संगत ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:—

(मात्रा लाख मीटरी टन में)

(मूल्य करोड़ रुपये में)

वर्ष	मार्गस्थ हानियां				भण्डारण हानियां			
	भेजी गई मात्रा	हानियां		भेजी गई मात्रा के संदर्भ में हानि की प्रतिशतता	जारी की गई मात्रा	हानियां		जारी की गई मात्रा के संदर्भ में भंडारण हानियों की प्रतिशतता
		मात्रा	मूल्य			मात्रा	मूल्य	
1986—87	250.3	4.28	98.60	1.71	463.7	2.23	53.00	0.48
1987—88	257.4	4.96	117.41	1.93	502.7	2.05	52.48	0.41
1988—89 (अनन्तिम)	246.2	3.02	79.81	1.37	410.2	1.21	34.26	0.30

†सभा में यह प्रश्न श्री राम जेठमलानी द्वारा पूछा गया।

(घ) भारतीय खाद्य निगम ने भण्डारण और मार्गस्थ कमियों के कारण हो रही हानियों को कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं। इस सम्बन्ध में किए गए कुछ महत्वपूर्ण उपाय नीचे दिए गए हैं :—

(1) खाद्यान्नों की वसूली के दौरान नमी से सम्बन्धित गुणवत्ता विनिर्दिष्टियों को कड़ाई के साथ लागू कराना ;

(2) प्रत्येक बोरी में भरे गए खाद्यान्नों की मात्रा को कम करना ;

(3) 5000 मीटरी टन अथवा उससे अधिक क्षमता वाले डिपुओं में तोल-सेतु लगाना ;

(4) खुले वैगनों का कम से कम प्रयोग करना ;

(5) डिपुओं पर सुरक्षा को कड़ा करने, आकस्मिक निरीक्षणों को तेज करने, स्टाक की नियमित रूप से जांच करने आदि जैसे प्रशासनिक उपाय करना ;

(6) ढकी हुई भंडारण क्षमता को बढ़ाना ;

(7) बोरियों की मशीनों से सिलाई करवाना ।

औद्योगिक लागत और मूल्य ब्यूरो से कहा गया है कि वे भारतीय खाद्य निगम के परिचालनों की लागत लेखा-परीक्षा शुरू करें और आशा है कि यह अध्ययन भारतीय खाद्य निगम के कार्यों में सुधार लाने के अतिरिक्त उपायों के बारे में सुझाव देगा ।

भारतीय खाद्य निगम के कर्मचारियों द्वारा कदाचार और भ्रष्टाचार करने के बारे में प्राप्त शिकायतों की जांच को तेज करने के उद्देश्य से हाल ही में भारतीय खाद्य निगम के सतर्कता तंत्र को सुदृढ़ किया गया है ।

SHRI SUBRAMANIAN **SWAMY:** Sir, that is another delaying question. If they are serious about Bofors, they should withdraw this question. Are you serious about Bofors, Mr. Jethmalani?

SHRI V. NARYANASAMY: Is the Minister attending the House or not?

SHRl RAM JETHMALANI: Sir, the first supplementary question which I have to ask is this. Sir, I must confess that the hon. Minister has been a Minister only for a few days and it is difficult, given this short time...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: And he will not be here for long.

SHRI RAM JETHMALANI:...to master the clever bureaucrats who draft...

SHRl A. G. KULKARNI; Mr. Jethmalani, do you know anything about the Food Corporation of India?

MR. CHAIRMAN: Let him put the question. Why are you disturbing him?

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: That is no preliminary question. It is simply delaying the Bofors question. He is doing it deliberately. The whole of last session was spent finding out about Bofors. He himself went abroad for the same purpose. And now he is talking about the Food Corporation of India.

DR. BAPU KALDATE: Why are you stalling your own question?

SHRI RAM JETHMALANI: I can assure you that I will be very brief so that you can ask your question. I hope the hon. Minister has read the figures which are a part of the answer. In 1986-87, the losses due to transit and storage stood at about Rs. 90 crores which shot up to nearly Rs. 200 crores in the next year, i.e. 1987-88 and the incomplete figures for 1988-89 are already about Rs. 125 crores. Now one action which your answer suggests is that recently the Vigilance (Machinery in the Food

Corporation of India has been strengthened. Now it is a very vague answer, Mr. Minister. I would like to have a specific answer. What is this Vigilance Machinery in the Food Corporation of India? To me it appears that you are asking the thief to investigate his own theft. Then what is the meaning of this word "recently" which has been introduced in this answer? "Recently" means when? When has this machinery been strengthened? When the figures of Rs. 90 crores shot up to Rs. 200 crores in 1987-88, what happened? Was the Vigilance Machinery invigorated? Was any investigation done? This is not an amount of foodgrains which rodents are rats can eat up. This is all human misappropriation and human crime, and I want to know whether any action has been taken against any corrupt and incompetent people for the years 1986-87 and 1987-88.

श्री सभापति : यह जानना चाहते हैं कि आपकी जो इनवेस्टिगेशन मशीनरी है, वह कब स्ट्रेंग्थन की गई है ?

श्री नाथू राम मिर्धा : मशीनरी डिपार्टमेंट की मशीनरी ने तेजी से काम शुरू किया है । छह सौ करोड़ रुपये की बचत खर्चों के अन्दर पिछले तीन साल में की है। वह बचत और ज्यादा बढ़ा रहे हैं । इन तीन-चार सालों का हमने प्रोग्राम बनाया है और हर साल फूड कार्पोरेशन में जो लासेज हैं, उन लासेज को घटाने के लिए हर साल जो हमारी डिपार्टमेंटल मशीनरी है और उसमें जो विजिलेंस मशीनरी है, उसको सक्रिय बना कर हमने 76 करोड़ रुपए बचाये हैं और फिर आगे बचाने की कोशिश है ।

SHRI RAM JETHMALANI: Sir, my second supplementary is, as of September, 1989, according to the report of your Economic Advisory Council, the stocks of foodgrains have sunk to an alarming low of about 10 million tonnes. I want to know whether anybody is busy dealing with the problem of replenishing these alarmingly low stocks and making provision for meeting possible misfortunes like natural calamities droughts, etc.

श्री नाथू राम मिर्धा: हम दो कमाडिटीज को प्रोक्यूर करके स्टाक बनाते हैं । फूड कार्पोरेशन का काम है किसानों से पर्चेज करना जबकि उनकी प्राइसेज़ जो गवर्नमेंट ने फिक्स की है, उससे कम हों, तो हम प्रोक्यूर करते हैं । चावल और गेहूं प्रोक्यूर करते हैं ।

धान प्रोक्यूरमेंट के बारे में, जो आपने अभी लो स्टाक की बात कही, वह एक वक्त आया था, पर अभी स्टाक ठीक बन रहे हैं। जो टार्गेट्स बनाये हैं, उससे हम आगे चल रहे हैं ।

गेहूं का जो सीजन आ रहा है, उसमें भी मेरे ख्याल में जो स्टाक्स लो हुए हैं, उसकी पूर्ति कर लेंगे । अब हमारे पास फूड पोजीशन अच्छी है, किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं है ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : माननीय मंत्री जी क्या यह बताने की कृपा करेंगे कि लोसेज . . .

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: All ruling party Members are asking supplementaries. What does it mean?.. ... *(Interruptions)*.. .The entire session was spent on Bofors last time and now he is asking about Food Corporation... (Interruptions)...

श्री वीरेन्द्र वर्मा : इनकी तो डिस्टर्ब करने की आदत हो गई है ।

श्री सभापति : आप सवाल कर ले ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : हां, वहीं कर रहा हूं। लेकिन इनकी तो आदत हो गई है डिस्टर्ब करने की ।

श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी : आदत क्या है, बोफोर्स की बात करिए । . . . . . (**व्यवधान**)

डा० बापू कालदाते : जब वक्त आएगा, तब बात करिए । जब बहस होगी, तो उस पर भी बहस हो जाएगी, इसकी क्यों चिंता कर रहे हैं ।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir, we want the Bofors question.

श्री सभापति : अभी हाउस तो चलने दो । वीरेन्द्र वर्मा जी, आप सवाल तो करें ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : सवाल कैसे करें, यह तो हमेशा डिस्टर्ब करते रहते हैं । क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि गत वर्षों में लासेज ट्रांजिट और स्टोरेज में बढ़े हैं ? एक फिगर प्रोवीजनल है आखिरी वर्ष की—इससे पहले दो वर्ष की जो उन्होंने फिगर्ज दी है, दोनों में ट्रांजिट और स्टोरेज में उनके लासेज बढ़े हैं ।

क्या माननीय मंत्री जी इसमें उन मिसिंग को भी इनक्लूड करते हैं जो भारी तादाद में, जिनका पता नहीं है, बहुत वर्षों से वह मिसिंग वैगंस अनट्रेस्ड है ?

मेरे सवाल का दूसरा पार्ट है कि कितने वैगंस, खुले मे वह अनाज भेजते हैं, कितने प्रतिशत-क्या वह यह बता सकेंगे कि कितना अनाज वह खुले वैगंस में और कितना बंद वैगंस में भेजते हैं । आखिरी मान्यवर, . . .

श्री सभापति : आप कितने सवाल करेंगे ?

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Delay, delay, delay!

श्री वीरेन्द्र वर्मा : आखिर में इन्होंने सुझाव दिया है, कास्ट आडिट आफ फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया . . .

श्री सभापति : आप एक सप्लीमट्री कीजिए ना ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : यह तो मेरे सवाल का पार्ट है ।

श्री सभापति : आपके वैगंस के बारे में दोनों सवाल ठीक थे कि वैगंस कितने हैं और कब से हैं, और कितना अनाज खुले और बन्द वैगंस में भेजते हैं । वह दोनों कनेक्टेड हैं ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मेरा तीसरा है. . .

श्री सभापति : नहीं, तीसरा नहीं जुड़ता है । बताइये मिर्धा जी ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : इसी का जो उत्तर दिया है, इसी से सम्बन्धित है ।

श्री सभापति : आपका सप्लीमेंट्री है और सप्लीमेंटरी आप एक ही पूछ सकते हैं ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : सप्लीमेंटरी ही तो पूछ रहे हैं ।

MR. CHAIRMAN: I don't permit please.

श्री वीरेन्द्र वर्मा : आप इतना तो उन्हें बिना इजाजत के टाइम दे देते हैं । मुझे इजाजत के वक्त भी रोकते हैं । . . . **(व्यवधान)**

श्री सभापति : यह सप्लीमेंटरी में नहीं आता । यह सप्लीमेंटरी मैंने आपको दिया है ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मैं सप्लीमेंटरी करता ही नहीं ।

श्री सभापति : मत करिए ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : नहीं करते ।

श्री सभापति : अच्छी बात है ।

PROF. C. LAKSHMANNA: The House has the right to know the answer.

श्री सभापति : मंत्री जी, जवाब दीजिए यह पूछ रहे हैं कि जो वैगन्ज चोरी हैं उनकी क्या खबर है और कितने खुले में भेजते हैं और कितने बन्द में भेजते हो ।

श्री नाथू राम मिर्धा : मैं इनका सवाल समझ गया । मैं इनका उत्तर भी देने को तैयार हूं । यह वैगन्ज गुम होने की बात कर रहे हैं, उसका मुझे ज्ञान नहीं है, पर स्टोरेज और ट्रांजिट में जो लास आपने ज्यादा होने की बात कही है तो फूड कार्पोरेशन एक पैरामीटर में काम करती है । एक दफा खरीद करके माल को स्टोर करना, वहां से डिस्ट्रीब्यूट करना, गवर्नमेंट की बंधी हुई कीमत पर खरीदना और गवर्नमेंट की बंधी हुई कीमत पर बेचना । इसलिए यह पैरामीटर्ज है

जिसके अन्तर्गत फूड कार्पोरेशन काम करती है। हमारा यह कोई व्यापारिक संगठन नहीं है; यह वैलफेयर संगठन है। . . . (**व्यवधान**) आप जरा सुनिए।

श्री सभापति : इनका सवाल वैगंज के बारे में है। . . . (**व्यवधान**)

श्री नाथू राम मिर्धा : मैं बता रहा हूं, इन्होंने कहा कि खुले में कितना ट्रांसपोर्ट करते हैं और बंद में कितना करते हैं और इन्होंने एक जो नैक्स्ट सवाल किया मैंने कहा कि वैगज गुम हैं उसका मुझे ज्ञान नहीं है।

श्री सभापति : बाद में उनके पास जवाब भेज दीजिएगा।

PROF. C. LAKSHMANNA: Mr. Chairman, Sir, one of the reasons why the loss is taking place is inadequate space. I would like to know from the Minister what percentage of grains is having adequate facility for storing and how much of it is now under the coverage of tarpaulin etc. Therefore, what steps will be taken by the Government to increase the space by which loss can be checked?

श्री सभापति : मिर्धा जी, वह जानना चाहते हैं कि आपका कितना स्टोरेज है और बाहर कितना रखना पड़ता है और क्या आप इसमें स्टैप्स ले रहे हैं कि वह खराब न हो।

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Next question, Sir.

श्री नाथू राम मिर्धा : 1986–87 में कवर्ड स्टोरेज था 12.52 लाख और दूसरा में बता रहा हूं "कैप" में था सिर्फ 13, तो परसेंटेज लगा लो। मैं माल की क्वांटिटी बता रहा हूं और फिर और साल का सुन लीजिए। यह तो ओपन में था और हायरड मैं बता देता हूं। हायरड में 99.44 था कवर्ड में "कैप" में 35.67, यह हायरड है और यह मैंने बताया कि 1986–87 तथा 1987–88 116.20 लाख टन ओपन में, 79.21 हायरड में, कैप में था और 12 और 34, जो खुला था। 1988–89 इट वाज 110 इन ओपन। . . . (**व्यवधान**)

SHRI SURESH KALMADI: **What** about Bofors? We want a discussion on Bofors.

श्री सभापति : आप जवाब देने दीजिए। आप डिस्टर्ब नहीं करते तो खत्म हो जाता।

श्री नाथू राम मिर्धा : अभी मेरे पास सारे फिगर्स हैं, अगर आप सुनना चाहें तो सुना दूं।

श्री सभापति : टेबल पर रखिए।

SHRI ANAND SHARMA: Dilatory tactics.

SHRI SURESH KALMADI; Dilatory tactics.

श्री अश्विनी कुमार : माननीय सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि इस विषय पर क्वश्चन नंबर 29 भी है। इसी विषय पर 29 भी है इसलिए दोनों को कृपया साथ जोड़ने का कष्ट किया जाए।

MR. CHAIRMAN: They are different.

Commission paid by AB Bofors in 155 AIM Howitzer Gun Deal

*25. SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Will the PRIME MINISTER be pleased to state;

(a) what steps have been taken by Government since December 1, 1989 to find out the names of the recipients of commission paid by AB Bofors in the sale of the 155mm howitzer gun; and

(b) by which date Government are likely to have all the details in thi* regard?

THE PRIME MINISTER (SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH): (a) and (b) The investigations which had been initiated are being pursued. Swiss authorities have been requested on 12-12-1989 to expeditiously furn-